दलित साहित्य का सामाजिक सरोकार, एक अध्ययन

अभिलाष कुमार गोंड

'दलित साहित्य' का प्रवाह मात्र मराठी में ही नहीं बल्कि भारतीय स्तर पर स्थापित हो चुका है। भारतीय और वैश्विक स्तर पर दलितों की अभिव्यक्ति की चर्चा हो रही है और विश्व के शोषितों के साहित्य के रूप में दलित साहित्य की ओर देखा जा रहा है। मराठी साहित्य से दलित साहित्य की व्यापक शुरूआत मानी जा सकती है। इस कारण महाराष्ट्र के मूल 'दलित साहित्य' को अब 'मराठी दलित साहित्य' जैसा विशेषण लगाया जाता है। इसके अलावा हर राज्य का अपना एक अलग दलित साहित्य मराठी दलित साहित्य को देखकर उभर रहा है जिसमें गुजराती दलित साहित्य, तमिल दलित साहित्य, हिन्दी दलित साहित्य, कन्नड़ दलित साहित्य जैसे नाम प्रमुख हैं। भारत के दलितों को लिखने की प्रेरणा मराठी दलित साहित्य से मिली जिसके माध्यम से दलितों ने अपनी आपबीती आत्मकथा के रूप में लिखा। भारत के अन्य राज्यों के दलितों को इससे व्यापक प्रेरणा मिली और दलित साहित्य को आदर्श मानकर वे अपना कार्य करने लगे।